International Journal of Sanskrit Research 2015; 1(5): 31-32

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2015; 1(5): 31-32
© 2015 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 24-05-2015
Accepted: 25-06-2015

डॉ0 सुजाता कुमारी
एम0ए0 द्वय, साहित्यालंकार,
विभागाध्यक्षा, संस्कृत, महाबोधी
महाविद्यालय, नालन्दा, बिहार, भारत

Correspondence
डॉ0 सुजाता कुमारी
एम0ए0 द्वय, साहित्यालंकार,
विभागाध्यक्षा, संस्कृत, महाबोधी
महाविद्यालय, नालन्दा, बिहार, भारत

भवभूति की नाट्यकला में नारी और दाम्पत्य

डॉ0 सुजाता कुमारी

सामान्य रूप में संस्कृत के नाटकों में शाही घरानों या ऊँच सामन्त कुलों की नारियों का ही चित्रण हुआ है। परिणाम स्वरूप निम्न मध्यम वर्ग अथवा निचले तबके की नारियों के विषय में इन नाटकों से अधिक सूचनाएँ प्राप्त नहीं हो सकती। भवभूति के नाम से जो तीन नाटक मिलते हैं। उनमें भी मुख्य रूप से उच्च कुल के नारियों तथा उनके दाम्पत्य प्रेम का ही चित्रण हुआ है। भवभूति ने अपने नाटकों में नारियों के जो चरित्र प्रस्तुत किए हैं, उससे यह लगता है कि ये अपनी कृतियों के द्वारा साहित्य के यथार्थ लक्ष्य को पूरा करने के लिए दर्षकों को आनंद और षिक्षा दोनों ही देना चाहते थे। जो कुछ उन्होने स्वयं अनुभव किया, वे उसको अपने दर्षकों की प्रतिक्रिया की चिंता किए बिना प्रस्तुत करना चाहते थे। साथ ही वे अपने दर्षकों को यह भी बतलाना चाहते थे कि आदर्ष का स्वरूप क्या होना चाहिए। 'महावीर चरित' में 'भवभमूति' का लक्ष्य राम की वीरता को चित्रित करना था। तत्कालीन समाज में प्रचलित पारम्परिक अवधारणा के इस क्षेत्र में नारियों का अत्यधिक महत्व नहीं था। सम्भवतः इसीलिए नाटककार ने राम के सामने नायिका सीता को इस नाटक में विषेष महत्व नहीं दिया किन्तु वीरता के भवों से भरे होने पर भी इस नाटक में कुछ ऐसी नारी पात्र हैं जो किसी भी समाज के लिए गौरव का विशय हो सकती हैं। इसलिए वाल्मीकि की रामायण की सीता और महावीर चरित की सीता के बीच जो अन्तर पाया जाता है। उसे किसी दूसरे कारण के परिपेक्ष्य में देखा जाना चाहिए। सबसे पहले यहाँ यह देना आवष्यक है कि नारी पात्रों के विषय में भवभूति के नाटकों में एक ऐसी विशेषता मिलती है, जो संस्कृत के किसी भी दूसरे नाटक में नहीं मिलती है। इन नाटकों में नारी पात्रों के एसे दो वर्ग हैं जो एक दूसरे से पूरी तरह भिन्न है। इनमें से एक वर्ग की प्रतिनिधि नारियाँ आर्य–कुल की गृहिणियाँ है। जिसका प्रतिनिधित्व सीता, उर्मिला और राजमाताएँ करती है।

दूसरे वर्ग की नारियाँ विन्धयाचल के उस पार दक्षिण की है जिनमें सूर्पणखा, त्रिजटा, मन्दोदरी, तृमणा इत्यादि प्रमुख हैं। पहले वर्ग की नारियाँ जहाँ मृदुल स्वभाव की विनम्र–समर्पण की भाव वाली तथा अपनी निजी वैयक्तिकता से रक्षित हैं। वही दूसरे वर्ग की दक्षिण के नारी पात्र राजनैतिक मामलों की गम्भीर पकड़ सक्रिय मस्तिष्क और शक्ति जैसे दुर्लभ गुणों से अपनी विषिष्ट वैयक्तिकता का छाप छोड़ती दिखलाई गयी है।

यद्यपि महावीर चरित के कथानक का स्रोत रामायण है। फिर भी भवभूति को स्वतंत्र प्रतिभा कथानक के साथ–साथ सीता उर्मिला और सूर्पनखा के मुख्य चरित्रों में भी परिवर्तन कर दिया हैं। 'रामायण' कालिदास के रघुवंष आदि में सीता को राम के बाएँ भाग में दिखलाया गया है। किंतु रामायण के किसी भी पाठक के लिए महावीरचरित में दिखलायी उस रोती बिलखती युवती को सीता के रूप में पहचानना कठिन है। जो अपने पति को युद्ध क्षेत्र में जाने से मना कर रही है। यहाँ सीता अपने कर्तव्यों के पालन करने में अपने पति को प्रोत्साहित करने की जगह बाधक बनी हुई सी प्रतीत होती है।

का गतिः। आर्यपुत्रा, न तावद्युत्माभिर्गन्तव्यं यावत्तातो नागच्छति।[1]

जब परषुराम राम को युद्ध के लिए चुनौती देते हैं तो सीता उन्हें आगे न बढ़ने हेतु हर संभव प्रयास करती हैं। हा धिक्। परागत एवं। आर्युपुत्र, परित्रयस्व साहसिक।[2] उसकी सखियाँ और दासियाँ उसे ऐसा करने हेतु प्रोत्साहित करती हैं। जब सीता देखती है राम उनके अनुरोध पर नहीं रूकेगें तो उनकी बाँह पकड़ कर उन्हें रोकने का भी प्रयास करती हैं।

इस प्रकार का व्यवहार मध्यकाल की किसी सामान्य असंस्कृत युवती के लिए योग्य हो सकता था किन्तु राजा जनक जैसे प्रसिद्ध राजा की पुत्री के लिए नहीं। महावीरचरित में सीता को रंगमंच पर बहुत कम दिखलाया गया है। जब राम और परषुराम के बीच युद्ध होता है तो उन्हें तथा उर्मिला को शीघ्रता से अन्तःपुर पहुँचा दिया गया है। इससे यह व्यक्त होता है कि उस समय समाज में पुरुष

अपनी किसी भी गम्भीर मामले को निपटाते समय स्त्री को बाधा समझते थे और ऐसे अवसरों पर उन्हें सुरक्षित स्थानों पर अन्तःपुर आदि में रखना ही उचित मानते थे। उन्हे लिपटी हुई ऐसी लतायें माना जाता था जो प्रेम करने और पालन करने योग्य मानी जाती थी। किन्तु विपत्ति के अवसरों पर उन्हे अनन्त कष्टों और चिंताओं का स्रोत समझा
जाता था।

'महावीरचरित' की आर्य नारियों के चरित्रों से तत्कालीन आर्यों के दाम्पत्य संबंध में पत्नी की स्थिति का यह संकेत महत्वपूर्ण हैं। किन्तु भवभूति के नाटकों की दक्षिणापथ की नारियाँ उत्तरापथ की नारियों से सर्वथा विपरीत जीवनयापन करने वाली दिखलायी गयी हैं। वे कहीं भी विचरण करने को स्वतंत्र हैं, सुरक्षित हैं तथा उनकी पहुँच राजनैतिक और प्रषासनिक क्षेत्रों में भी है। इस वर्ग की सबसे प्रमुख नारी चरित्र सूर्पनखा है। रामायण में उत्तरापथ की प्रमुख नारी चरित से वह सर्वथा विपरीत है। ऐसा लगता है कि रावण की सभा में उसे महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। लंका के शक्तिषाली शासक का चाचा और चतुर मंत्री माल्यवान तक सूर्पनखा को अपने विष्वास में लेना आवष्यक समझते हैं। जब वह माल्यवान के सामने जाती है तो माल्यवान आसन देकर उसका स्वागत करता है।

ब्राहमणातिक्रम त्यागो भवतामेव यूतेथ।
जमदग्यच वो मित्रमन्यथा दुर्मनायते।[3]

यद्यपि सूर्पनखा राजा की भगिनी है और मंत्री की भतीजी फिर भी उत्तर की अपनी बहनों की भांति वह अपने को अन्तःपुर के अन्दर बंद नहीं रखती अपितु आवष्यक राज्य कार्यों को लेकर स्वयं शत्रु के षिविर तक चली जाती है।

राजा और मंत्री उससे राज्य की महत्त्वपूर्ण नीतियों के संबंध में परामर्ष भी लेते हैं। रामायण में रावण की भगिनी को विलासिनी और निर्लज्ज नारी के रूप में चित्रित किया गया है। जो राम की सुन्दरता से आकृष्ट होकर उचित या अनुचित किसी भी उपाय से अपने लिए राम को प्राप्त करना चाहती है। परन्तु भवभूति की सूर्पनखा रामायण की सूर्पनखा से एकदम भिन्न है। वह लंका के महामंत्री की मार्गदर्षिका है और शत्रु के षिविर में अव्यवस्था करने हेतु उसे भेजा गया है। निर्भय होकर वह युद्ध स्थलों में भी जाती है और किसी प्रकार की भीषण स्थिति उसे भयभीत नहीं करती। सम्भवतः भवभूति ने अनार्य संस्कृति की नारियों की स्थिति का चित्रण आर्य नारियों के चरित्रों की दुर्बलताओं को व्यक्त करने के लिए किया है किन्तु जब उत्तरापथ के दर्षकों ने इस प्रकार चरित्रों की सृष्टि को प्रोत्साहन नहीं दिया तो सम्भवतः उन्होंने अपने नाटक के लिए एक ऐसे कथानक को चुना जिसमें ऊँचे मध्यमवर्ग की नारी का अपना कोई व्यक्तित्व नहीं था। भवभूति ने अपने दूसरे नाटक 'मालतीमाधव' की रचना सम्भवतः इस विचार से की कि यदि लोग उत्तर भारत की पतिपरायणा एवं आत्मसमर्पण वाली व्यक्तित्वहीन नारियों के चरित्र को ही देखना पसंद करते हैं तो क्यों न वे सामान्य प्रेम व्यापार में व्यस्त ऐसे ही चरित्रों की सृष्टि करें।

'मालतीमाधाव' की नायिका भूरिवसु नामक ब्राह्मण मंत्री की छोटी पुत्री ही नाटक का उद्देष्य उन्मुक्त प्रेम का चित्रण हैं।

मनोरोगस्तीव्रं विशमिव विसर्पत्याविरतं
प्रमाथी निर्घूमा ज्वलति विघुतः पावक इव।
हिनंस्ति प्रत्यड़ ज्वर इन गरीयानित इतो
न मा त्रातं तातः प्रभवति न चाम्बा न भवती।।[4]

मुख्य कथानक मालती और माधाव के बीच का पारस्परिक प्रेम है जिसकी परिणति दोनों के विवाह–बन्धन में बंधाने के रूप में होती है। उपकथानक के रूप में मकरन्द और मदयन्तिका के बीच का प्रेम सम्बन्ध चित्रित किया गया है।

नाटक में नारी पात्रों की भरमार है जो सभी सामान्य व्यक्तित्व को प्रदर्षित करती है।

''प्रेयो मित्रं बन्धुता वा समग्रा सर्वे कामाः शेवधिजीतितं वा।
स्वत्रीणां भर्ता, धार्मदाराष्च पुंसामित्यन्योन्यं वत्सयोज्ञतिमस्तु।।[5]

अधिकतर नारी पात्रों का अपना कोई स्वतंत्र व्यक्तित्व नहीं है। नाटक की मुख्य नारी पात्र मालती और मदयन्तिका है जो विवाह योग्य आयु को प्राप्त है। ये दोनों तत्कालीन आर्य लोगों के समाज के सामन्ती वर्ग के कुलों की युवतियों का प्रतिनिधित्व करती है। मालती को ऐसी आज्ञाकारिणी पुत्री के रूप में भवभूति ने चित्रित किया है जो अपने माता–पिता के विरूद्ध जाने की बात सोच तक नहीं सकती। मालती और मदयन्तिका दोनों ही अपने प्रेमियों से सीधे बात नहीं करती हैं। अपितु अपनी सखियों के माध्यम से ही उन्ही बातें होती है। भवभूति ने अपने तीनों नाटकों में एक प्रषंसनीय तथ्य को व्यक्त किया है और यह आदर्ष दाम्पत्य–प्रेम।

जहाँ तक नारियों की स्थिति का सम्बन्ध है, भवभूति ने अपने इन दोनों नाटकों में अपने समय के समाज में नारी की वास्तविक दषा का जो चित्राण किया है वह बहुत उत्साह जनक नहीं कहा जा सकता। उदाहरण के लिए मालती मदयन्तिका सीता और उर्मिला सभी रघुकुल की नारियाँ है किन्तु षिक्षा आदि के सम्बन्ध में वे समाज के दूसरे वर्गों के समान नारियों से विषिष्ट प्रतीत नहीं होती, विदेह के वीर–कुल में उत्पन्न होकर भी सीता और उर्मिला युद्ध के नाम से काँपने लगती हैं। नाटक में सांकेतिक दूसरी विषिष्टता, यह है कि समाज में वृद्धों तथा ब्राह्मणों का निरंकुष शासन प्रचलित था। परिवार की स्त्रियाँ परिवार के बूढ़ों के निर्णयों को सिर झुकाकर स्वीकार करती थी। विवाह अभिभावक के द्वारा तय किया जाता था। और इस सम्बंध में लड़कियों की कोई भी आवाज नहीं होती थी। 'मालतीमाधव' के अधययन से यह स्पष्ट होता है कि उस समय में नारियों को उच्च षिक्षा की सुविधाओं से वंचित नहीं रखा गया था। उदाहरण स्वरूप इस नाटक की कामन्दकी, सौदामिनी और अवलौकिता तथा उत्तर रामचरित की अत्रेयी उच्च षिक्षा प्राप्त सम्पन्न हैं। उस समय नारियों का उच्च षिक्षा पाने की तथा इसके लिए आचार्य के घर जाने की स्वतंत्रता थी। किन्तु यह स्वतंत्रता ब्रह्मचर्य जीवन बिताने वाली नारियों को ही प्राप्त थी। उच्च कुल की नारियों को कम या अधिक गृहस्थ जीवन में बँधने के उपरान्त नारी का अपना व्यक्तिगत दृष्टिकोण का किसी तरह का स्वतंत्र अस्तित्व नहीं रह जाता था। भवभूति के नाटकों में विधवा विवाह और सतीप्रथा का कोई उल्लेख नहीं है। किन्तु वृद्धजनों के प्रति सम्मान में घूंघट डालने की प्रथा प्रचलित प्रतीत होती है।

इस प्रकार भवभूति के नाटकों में जिस समाज का चित्रण हुआ है। उसमें नारियों की स्थिति श्री 'हर्ष और 'विषाखदत्त' के काल के समाज से अधिक अच्छी नहीं प्रतीत होती है। एक सच्चे कवि के रूप में भवभूति ने सभी चीजों को सही सन्दर्भ में देखा समझा और जब उन्होने राष्ट्र के कोमल पुष्पों को मुरझाया हुआ पाया तो उनकी आत्मा पीड़ित हो गयी। भवभूति की आत्मा की पीड़ा ने सर्वथा अभिनय अनुभवों की अधिपत्यता तथा मनुष्य पर धर्म का अधिकार कवि भवभूति के हृदय को पीड़ित करने लगी और उनकी सवंदेनात्मक प्रवृति विद्रोह में उठ खड़ी हुई।

परन्तु समय ने उन्हें जीवन के अनेक अनुभव प्रदान किए। जिससे उनके अन्दर भारतीय नारीत्व के आदर्ष की महानता का भाव जाग उठा, जो सीता के उच्च चरित्र के रूप में प्रतिबिम्बित हुआ। उन्हें इस बात का भी स्मरण हुआ कि इतनी महान नारी को भी समाज और अपने पति से तिरस्कार और अपमान मिला। इन चरित्रों में उन्होनें किसी भी भारतीय पत्नी या पति के अविभाज्य–दाम्पत्य का आदर्ष प्रस्तुत किया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची

1. महावीर चरित्रम्, अंक 2, पृष्ठ 63.
2. महावीर चरितम्, अंक 2, पृष्ठ संख्या 67.
3. महावीर चरितम्, अंक 2, श्लोक 10.
4. मालती माधव, अंक 2, श्लोक संख्या 1.
5. मालती माधव, अंक 2, पृष्ठ संख्या 86.